आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक विज्ञान षिक्षकों के शिक्षण अनुभव तथा शिक्षण अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन

श्री एम.एस. मिश्रा
सहप्राध्यापक, मिलेनियम कालेज ऑफ एजुकेषन,
भोपाल, म्उंपसरूउेण्उपैातं1008/हउंपसण्बवउ

डॉ. आर. एस. पाण्डेय
मध्यप्रदेष, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण
परिषद. भोपाल, म्.उंपसरूतेचंदकमलण्मकन/हउंपसण्बवउ

संक्षेपिका

समाजिक विज्ञान, प्रारंभिक स्तर की षिक्षा से संबंधित समग्र विषयवस्तु का एक अभिन्न अंग है जिसे प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्च माध्यमिक कक्षाओं तक पढ़ाया जाता है । प्रायः आदिवासी विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान से संबंधित मानचित्रों, भौगोलिक घटनाओं, चित्रों, ऐतिहासिक जानकारियों एवं अन्य विभिन्न संस्कृतियों को समझने में अत्यंत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कमियां आने लगती है और विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान विषय में धीरे–धीरे रूचि लेना छोड़ देते हैं। शोधकर्ता द्वारा शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में किस प्रकार से उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता है एवं किस चर का अधिक प्रभाव इन आदिवासी विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ेगा। इस अनुसंधान के दो मुख्य उददेष्य मुख्यतः सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन और दूसरा, सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियें की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। उद्देष्य के अनुसार परिकल्पनाओं के आधार पर यह *निष्कर्ष निकला कि* एक से दस वर्ष तक के शिक्षण अनुभव रखने वाले सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पडता है एवं औसत षिक्षण अभिवृत्ति के शिक्षकों का प्रभाव आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक पडता है।

प्रस्तावना : शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। जीवन के प्रत्येक अनुभव को शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा का संबंध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है। सामाजिक विज्ञान हमारे सामाजिक परिवेष से जुडा होने के कारण अत्यंन्त रोचक विषय है। इसका अध्यापन प्रांरभिक स्तर की सभी कक्षाओं में किया जा रहा है। भारत में प्रारंभिक स्तर की षिक्षा कक्षा पहली से आठवीं तक की मानी जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अनुसूचित जाति और जनजातियों की शिक्षा के संदर्भ में कहा गया है कि 'अनुसूचित जातियों और जनजातियों के शैक्षिक विकास पर बल दिया जायेगा, जिससे कि वे गैर–अनुसूचित जनजाति के लोगों के बराबर आ सकें। षिक्षकों के शिक्षण अनुभव तथा शिक्षण अभिवृत्ति का प्रभाव अदिवासी विद्यार्थी के शैक्षिक उपलब्धि पर किस प्रकार पड़ता है। यह जानने के लिए आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के शिक्षण अनुभव तथा शिक्षण अभिवृत्ति को अनुसंधान हेतु चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देष्यः शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

(1) सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियें की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः शोध उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पनाएँ निम्नवत हैं–

भ1: सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता ।

भ2: सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

न्यादर्ष : बैतूल जिले के ऐसे शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें आदिवासी छात्र–छात्राएँ अध्ययनरत थे। न्यादर्श में कुल 616 छात्र–छात्राएँ सम्मिलित थे। न्यादर्ष हेतु कक्षा आठवीं के शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों में पढ़ाने वाले सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापकों का चयन किया गया था।

विश्लेषण एवं व्याख्याः षोध कार्य का विष्लेषण एवं व्याख्या परिकल्पना के आधार पर किया गया।

भ1: <u>सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।</u>

सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 1–10 वर्ष, 11–20 वर्ष एवं 21–30 वर्ष तक के मध्य अनुभवी पढ़ाने वाले षिक्षकों का चयन किया गया था। जिसका आवृति प्रतिषत निम्नलिखित तालिका 1.1 में दिया गया है।

तालिका 1.1: शिक्षण अनुभव के आधार पर शिक्षकों का आवृत्ति प्रतिषत

क्र.	शिक्षण अनुभव (वर्षों में)	सामाजिक विज्ञान के शिक्षक	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	1–10	56	36.36
2.	11–20	46	29.87
3.	21–30	52	33.77
	योग	154	100

व्याख्याः तालिका 1.1 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि– सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अनुभव का प्रतिषत क्रमषः 1–10 वर्षों में 36.36, 11–20 वर्षों में 29.87 तथा 21–30 वर्षों में 33.77, पाया गया, जिसमें सबसे अधिक अर्थात 1–10 वर्षों तक षिक्षण अनुभव रखने वाले सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पडता पाया गया।

तालिका 1.2: शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्ग योग	मुक्तांश	औसत वर्ग योग	थ्अनुपात	सार्थकता स्तर	सार्थकता
समूह के बीच	1278.07	2	639.03	18.59	0ण्01त्र3ण्63 0ण्05त्र3ण्00	सार्थक
समूह के अन्दर	21106.17	614	34.37			
योग	**22384.25**	**616**				

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कत्रि2 एवं 616 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिकामान 3.63 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिकामान 3.00 है जबकि थ् अनुपात का परिकलित मान 18.59 है। स्पष्ट है कि परिकलित मान तालिकामान से अधिक है अर्थात् 4.63 ढ18.59 एवं 3.00ढ18.59। अतः सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का अदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना भ्1 असत्य है एवं अस्वीकृत की जाती है।

भ्2: <u>सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।</u>

सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियें की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए षिक्षकों का चयन नकारात्मक, औसत, एवं धनात्मक अभिवृत्ति के आधार पर किया गया जिसका आवृत्ति प्रतिषत तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 1.3: षिक्षण अभिवृत्ति के आधार पर सामाजिक विज्ञान शिक्षकों का आवृत्ति प्रतिषत

क्र.	अभिवृत्ति	सामाजिक विज्ञान के शिक्षक	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	नकारात्मक	32	20ण्78
2.	औसत	76	49ण्35
3.	धनात्मक	46	29ण्87
	योग	154	100

- तालिका 1.3 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अभिवृत्ति के घटकों का प्रतिषत क्रमषः नकारात्मक में 20.78:, औसत में 49.35:, धनात्मक में 29.87: पाया गया। जिसमें सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अभिवृत्ति में औसत घटकों का सबसे अधिक अभिवृत्ति का प्रभाव 49.35: पाया गया।

तालिका 1.4: सामाजिक विज्ञान विषय की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्ग योग	स्वतंत्रता की कोटि	औसत वर्ग योग	थ् अनुपात	स्तर	सार्थकता
समूह के बीच	2807.35	2	1403.67	44.02	0ण्05त्र3ण्00	सार्थक
समूह के अन्दर	19576.90	614	31.88			
योग	**22384.25**	**616**				

तालिका 4 से स्पष्ट है कि सामाजिक विज्ञान विषय की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्रसरण विश्लेषण का विष्लेषण करने पर यह पाया गया कि कत्रि2 एवं 616 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिकामान 3.00 है जबकि थ् अनुपात का परिकलित/गणना मान 44.02 है। अर्थात् परिकलित मान, तालिकामान से अधिक है। अतः सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों के शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना भ्2 असत्य है एवं अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

- सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियें की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि 1 से 10 वर्ष तक षिक्षण अनुभव रखने वाले सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के षिक्षण अनुभव का आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पडता है।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि औसत षिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान, नकारात्मक व धनात्मक की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि षिक्षण अभिवृत्ति का प्रभाव आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर औसत रूप से अधिक पडता है।

सुझाव

- सामाजिक विज्ञान को ग्लोब चित्रों, नक्षों, भ्रमण, यू–ट्यूब आदि के द्वारा समझाया जाना चाहिए जिससे आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अधिक वृद्धि हो।
- षिक्षकों को प्रषिक्षण के माध्यम से नवाचारी तकनीकी, स्मार्ट क्लास आदि का प्रयोग करने की जानकारी दी जानी चाहिए।
- बच्चों से स्वयं नक्षे एवं चित्र तथा महापुरूषों की कहानियाँ बनवानी चाहिए।
- बच्चों को सामाजिक विज्ञान पढ़ने एवं नवाचारी तकनीकी के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि सामाजिक विज्ञान पढने में आदिवासी विद्यार्थियों में रूचि जाग्रत हो सके।
- बच्चों को भौगोलिक घटनाओं के बारे में भी बताना चाहिए जिससे इनमें सामाजिक विज्ञान को पढने में रूचि जाग्रत हो सके।
- आदिवासी विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान के वर्तमान एवं पूर्व इतिहास के बारे में बताना चाहिए तथा कक्षा में ज्यादातर गतिविधि/अभिनय के माध्यम से समझाना चाहिए।

संदर्भ

- श्रीवास्तव, रवीद्र बहादुर (2007). माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति, अन्य पिछडी जाति एवं अनुसूचित जाति वर्गों के अध्यापकों की लघु परिवार एवं जनसंख्या षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्यापन, अप्रकाषित पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विष्वविद्यालय, जौनपुर उ.प्र.।
- गैरेट, एच.ई. (1978). शिक्षामनोविज्ञान में सांख्यिकी, नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिशर्स।
- जैन, कौषल (2009). अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. एम.एड.,लघु शोध, भोपाल बरकतउल्ला विष्वविद्यालय।
- मेघावत, मुकेष (2007). अनुसूचित जाति के उच्च एवं निम्न शैक्षिक निष्पत्ति वाले विद्यार्थियों में सृजनषीलता का अध्ययन, अप्रकाषित लघुषोध, राजस्थान उच्च अध्ययन षिक्षा संस्थान, विष्वविद्यालय, सरदार शहर।
- राय, पारसनाथ (2001). अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।
- सरीन एण्ड सरीन (2008). शैक्षिक अनुसंधान बिधियाँ, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- सिलावट, राजकुमारी (2014). अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की कम उपस्थिति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध, डाइट, बीजलपुर (इन्दौर), राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल।